चतुर्थ अध्याय

साहित्यिक शिक्षा के संदर्भ में पत्रकारिता का योगदान

मानव जीवन में जो सुन्दरता की अभिव्यक्ति है वही साहित्य है। साहित्य में सत्य होती है। साहित्य की रचना और प्रेषणीयता का आधार मानसिक वृत्तियाँ और जीवन की सहज अनुभूतियाँ ही है। युग के परिवर्तित स्वरूप के साथ हर युग में जीवन मूल्य बदलते हैं और उसके साथ ही साहित्य का उद्‌देश्य भी बदल जाता है । साहित्यिक शिक्षा से सीधा सरल अर्थ रचनाधर्मिता के साथ–साथ अद्यतन वैचारिक चिन्तन भी है। आज लोग समाचार से अधिक विचार जानना चाहते हैं यानि 'न्यूज' से अधिक 'व्यूज' में लोगों की रुचि बढ़ी है। समकालीन भारतीय साहित्य, भाषा, गगनांचल, आजकल, मधुमती, हिमप्रस्थ, शीराजा, उत्तरप्रदेश, इन्द्रप्रस्थ भारती आदि पत्रिकाएँ हमारे सामने अवश्य आते हैं। पत्रकारिता में रोचकता पहला गुण है। इस रोचकता के अतिरिक्त अखबार में छपी घटना के पीछे सच्चाई की बारीकी भी होना चाहिए क्योंकि समाचार की तात्कालीक आवश्यकता होती है इसलिए उसे गतिशील साहित्य भी कहा गया है। अच्छे समाचारों की एक विशेषता उसका महत्व है। अतः इतिहास भी इसका विषय होता है। अखबारों में छपी महत्वपूर्ण घटनाएँ इतिहास का विषय बनती है। अंतर्राष्ट्रय, राष्ट्रीय, प्रादेशिक, आंचलिक और स्थानीय स्तर पर भी जिन घटनाओं का महत्व होता है वे ही समाचार–पत्र का अंश बनते हैं इसलिए पत्रकारों को समाचार के इतिहास संदर्भ को भी जानना आवश्यक है। साहित्यिक शिक्षा के अन्तर्गत मुख्यतः गद्य और पद्य ये दो भेद होते हैं, जिनमें अनेक विधाएँ आती है। इसमें नाटक, निबन्ध, संस्मरण, समीक्षा, हास्य–व्यंग्य, कथा, आत्मकथा, यात्रा वर्णन, जीवनी, उपन्यास आदि सम्मिलित हैं। साहित्य के प्रचार–प्रसार के लिए पत्रकारिता एक अच्छा 'घोड़ा' सिद्ध हो सकता है। साहित्य जहाँ मूलतः 'विधा' से संबंधित है, वहीं पर पत्रकारिता मूलतः संप्रेषण से संबंधित है। 'माध्यम'के लिए

जरूरी है कि विधा एकदम 'प्रभावी' हो । इससे ही माध्यम पाठक तथा लेखक, साहित्यकार, पत्रकार के बीच संबंध स्थापित करने में सफल हो सकता है।

साहित्य के दीर्घ जीवन के लिए उसमें पत्रकारिता का समावेश आवश्यक है। साहित्य को पत्रकारों का सम्बल प्राप्त होना है तभी वह अधिक दिन तक जीवित रह सकता है। पत्रकार की विशेषता यह है कि वह सब कुछ अपने समय के बारे में लिखता है यही इस बात का प्रतीक है किवह भविष्य के बारे में बहुत कुछ लिख सकते हैं। पत्रकार जब सामायिक संदर्भों से शाश्वत मूल्यों से जोड़कर कुछ लिखता है तो वही साहित्य बन जाता है। पत्रकार अपने पत्रों के माध्यम से जनसाधरण में साहित्यिक चेतना को जगाते हैं , नहीं तो साहित्य के बड़े–बड़े ग्रन्थ अपठित रहकर पूर्णरूप से अनुपयोगी हो जायेगा। पत्रकारिता से ही लोकरुचि का परिष्कार संभव है और बहुत हद तक पत्रकार भी साहित्य के अभावों को पूरा करते हैं। साहित्यकार जिस शाश्वत साहित्य का निर्माण करता है उसकी गतिशीलता और विकास के लिए पत्रकारिता आवश्यक है। पत्रकारिता साहित्य के मार्ग में अवरोध नहीं बनती बल्कि उसकी यथेष्ट सहायता करती है और यदि पत्रकारिता के बारे में विस्तृत अध्ययन किया जाए तो पत्रकारिता भी साहित्य का ही अंग कह सकते हैं। पत्रकारिता चूँकि साहित्य में बहुत पहले जुड़ी हैं और दोनों में अन्योन्याश्रित संबंध है अतः पत्रकारिता के साहित्यिक अनुशीलन का औचित्य स्वयं सिद्ध हो जाता है। सामान्य जनता की सेवा की भावना का अर्थ है कि समाचार की दिशा रचनात्मक होनी चाहिए।

पत्रकारिता के माध्यम से भाषा और साहित्य दोनों के विकास को बल प्राप्त होता है अतः साहित्य के विकास के लिए पत्रकारिता के विकास के क्रमबद्ध इतिहास का ज्ञान होना भी आवश्यक है। हिन्दी साहित्य की भूमिका का निर्माण करने में भी समाचार पत्रों का योगदान भी है। मतवाला का प्रकाशन हिन्दी

पत्रकारिता के साहित्यिक पक्ष के अभ्युदय का संकेत था। इसी पत्र के द्वारा ही हमें निराला जैसे कवि मिले।

डॉ. इन्दरराज बैद 'अधीर' के अनुसार–

जनहित को आदर्श मानना पत्रकारिता है।

भय–लालच, संकोच त्यागन पत्रकारिता है।

शोक नहीं है, खेल नहीं है और नहीं व्यापार,

पूजा, सेवा, त्याग, साधना पत्रकारिता है।

डॉ. अर्जुन तिवारी के शब्दों में –समाज के विचारों और साहित्य की संवाहिका का नाम ही पत्रकारिता है।

पत्रकारिता साहित्य से ही जुड़ा हुआ है। तब पत्रकारिता, रचना–चयन में निम्नलिखित तत्वों को प्रधानता देती है।

- आत्मीयता, सामीप्य और घटना की संभाव्यता।
- लोकप्रियता और जनोन्मुखता।
- मानवीय मूल्यों एवं मानवीय अस्मिता की पक्षधरता।
- समसामयिकता में यर्थाथता।
- प्रगतिशीलता ।
- रूढ़ियों और विसंगतियों से मुक्ति की प्रेरणा।
- प्रतिष्ठा और मर्यादा को महत्व।
- अश्लीलता और अपसंस्कृति से मुक्ति।
- सांस्कृतिक, मूल्यगत परिवर्तन एवं क्रांतिशील।
- आधुनिक जीवन बोध, मूल्य और जीवन प्रणाली की स्वीकृति और अंगीकृति।
- मानवीय संवेदना, सौंदर्यपरकता रचना में अपेक्षित होती हैं।
- भावों एवं विचारों की जनोन्मुखता अपेक्षित होती है।

- भाषा शैली की सहजता और सामासिकता पर बल।
- मानवता की सेवा, सत्य और न्याय की पक्षधरता।

पत्रकारिता जहाँ 'मन' है वहीं साहित्य 'आत्मा' है। उस 'वस्तु' की जिसे प्रस्तुत करना है, कहता है, कथन करना है, एक्सपोज किया है। इस सच्चाई की रोशनी में साहित्य की दृष्टि से पत्रकारिता की विधा के लिए साहित्य के विभिन्न रूपों 'यथा–कथा', वृत्तांत, यात्रा, फीचर, संस्मरण, साक्षात्कार या लेख, समीक्षा, व्यंग्य, गीत, कविता आदि को नये रूपों में डालकर प्रस्तुत करने की आवश्यकता है। पत्रकारिता सामान्यतः तात्कालिक होती है। घटनाएँ पुरानी होती जाती हैं और अखबार बासी पर साहित्य की उम्र लंबी होती है। साहित्य की यह दीर्घ जीविता उसकी गुणवत्ता पर निर्भर करती है। साहित्यिक संपृक्ति पत्रकारिता को विचार–प्रधान तथा संवेदनशील बनाती है। इससे शिक्षा का प्रचार–प्रसार भी अधिक तत्पर है। पत्रकारिता में साहित्यिक मूल्यों का समावेश उसे दीर्घजीवी तथा अधिक मर्मस्पर्शी बनाता है। पत्रकारिता के द्वारा साहित्य संभवित यथार्थ को प्रस्तुत करने का प्रयास करता है।

4.1 शिक्षा की गुणवत्ता में पत्रकारिता का योगदान :

पत्रकारिता और शिक्षा का आपस में घनिष्ठ संबंध है क्योंकि शिक्षितों की संख्या में वृद्धि होने के साथ–साथ ही पत्रकारिता में भी वृद्धि होगी। दोनों का उद्‌देश्य बेहतर दुनिया का निर्माण है और दोनों ही नए मानव–सम्बन्धों की तलाश करते हैं। पत्र–पत्रिकाएँ आज हमारे जीवन में इस तरह घुल–मिल गयी हैं कि इसके बिना हम किसी भी दिन के शुभारंभ की कल्पना भी नहीं कर सकते। शिक्षित समाज ही समाचार–पत्र पढ़ने का आदि हो गया है।

पत्रकारिता के द्वारा शिक्षा की गुणवत्ता में वृद्धि लाने के लिए इसकी चार बुनियादी बातें न बदली हैं, न बदलेंगी। इनमें

पहली बात है – सच्चाई की निरंतर खोज।

दूसरी है – बदलाव की पहल या बदलाव की दिशा में काम करना।

तीसरीहै – आम लोगों के हितों की रखवाली और उनके भले के लिए काम करना।

चौथी और संभवतः सबसे ज़रूरी है – अपनी आजादी को बरकरार रखना; पूंजी, तकनीक और सत्ता, सभी से।

यदि पत्रकारिता एक ओर समाज की गतिविधि से प्रभावित होती है तो दूसरी ओर समाज में शिक्षा के प्रचार–प्रसार में भी योगदान देती है। पत्रकारिता के द्वारा शिक्षा, लोकतंत्र, मूल्य, नीति भी संचारित एवं निर्देशित होते हैं जिससे समाज की अभिजात्यता विकसित होती है। शिक्षा समाज का दर्पण हैं जिसमें अतीत एवं वर्तमान की सीख तो बिम्बित होते ही हैं, भविष्य–निर्माण के दिशा–निर्देश भी निहित होते हैं।

पत्रकारिता में विद्यालय से लेकर विश्वविद्यालय, छात्रसंघ के चुनाव, वाद–विवाद प्रतियोगिता, गोष्ठियाँ, परीक्षाफल, विश्वविद्यालय की सिंडीकेट की कार्यवाही के समाचार, शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे परिवर्तन, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग(यू.जी.सी) की समय–समय पर घोषित नीतियाँ, स्कूल–कॉलेज–विश्वविद्यालय के छात्र, शिक्षक, कर्मचारियों की माँगों के समर्थन में आयोजित हड़तालों के समाचार, शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश संबंधी धरने, जुलूस, आदि के बारे में भी खबर देते हैं। इससे शिक्षा के क्षेत्र में जनता को समय–समय पर होनेवाले परिवर्तन, नित नई चीज़े, खबरें आदि के बारे में ज्ञात होते हैं। शिक्षा से संबंधित रोचक और सारसूचक जानकारी देना पत्रकारिता का लक्ष्य है।

पत्रकारिता, शिक्षा की गुणवत्ता में योगदान देने के साथ–साथ वर्तमान युग की मार्ग–निर्देशिका भी है। शिक्षा, संस्कृति, व्यापार, सामाजिक– पारिवारिक मूल्यों से

यह जन–मानय को जोड़ती है और रोजगार–सेवा का विज्ञापन प्रकाशित कर युवा–शक्ति को अर्थार्जन का अवसर प्रदान करती है।

'' समाचार– पत्र ही एक ऐसा साधन है जिसमें स्थायित्व है। न तो रेडियो को रीपले कर सकते, न ही टी.वी को, इसलिए समाचार–पत्रों की उपयोगिता दोनों के मुकाबले अभी ज्यादा है। आपके पास जब समय हो, उठाइए पढ़ लीजिए, विश्लेषण कर लीजिए, जबकि रेडियो और टी.वी के साथ ऐसा बिल्कुल संभव नहीं है। प्रमाण स्वरूप समाचार–पत्रों की खबरों को लिखने–पढ़ने में कोट कर सकते हैं, जबकि रेडियो और टी.वी पर सुनी बात को प्रमाण के अभाव में कोट करना मुश्किल होता है।''

–डॉ. मुश्ताक अली[*1]

पत्रकारिता के द्वारा वैज्ञानिकों, विशेषज्ञों को विज्ञान, तकनीक और व्यापार–व्यवसाय, प्रबन्धन आदि की व्यावसायिक शिक्षा के साथ–साथ अपनी संस्कृति, राष्ट्रीयता और राष्ट्र भाषा की गरिमा की शिक्षा– दीक्षा प्रदान करने की व्यवस्था भी है। साहित्यिक–कलात्मक रुझान को बढ़ाना, नैतिक–धार्मिक मूल्यों को प्रतिष्ठित करना, भौतिकवादी दुनिया में सही मार्ग दिखाना और सुखी जीवन के द्वार खोलना भी पत्रकारिता के द्वारा ही संभव है। संस्कृति, सभ्यता और स्वतन्त्रता की वाणी होने के साथ ही यह शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व क्रान्ति की अग्रदूतिका है।

पत्रकारिता के द्वारा किसी समसामयिक महत्व के विषय, घटना, स्थिति या तथ्यों का वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन, सर्वेक्षण और अनुसंधान करके वास्तविक निष्कर्ष निकाले जाते हैं। इससे ही प्रासंगिक विषयों, स्थितियों अथवा तथ्यों के तर्कसम्मत अध्ययन और अनुसंधान का परिक्षण कर किन्हीं निष्कर्ष पर पहुँचा जाता है। पत्रकारिता में शिक्षा से संबंधित किसी महत्वपूर्ण घटना, व्यक्ति, तथ्य अथवा अप्रकट दस्तावेज को उद्घटित करने का प्रयास होता है। उदाहरण के

रूप में किसी तथ्य के बारे में सूचना के साथ चित्र भी प्रस्तुत करते हैं। सूचना से संबंधित विषय को विस्तार में इन्टरनेट के द्वारा पढ़ सकते हैं।

इस तरह पत्रकारिता लोगों को शिक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। पत्र–पत्रिकाएँ इस दिशा में बहुत सक्रिय हैं।

अमेरिका में पत्रकारिता को **वॉच डॉग** कहा जाता है। लेकिन उसका कार्य अखबार निकालने तक सीमित नहीं है वे शिक्षा के क्षेत्र में भी कार्य करते हैं और जनमाध्यम का रूप लेते हैं। समाचार पत्र या राजनीतिक पत्रिकाएँ बहुत लोगों तक पहुँचती हैं या निकाली जाती है, उनकी भाषा आम लोगों की ही भाषा होती है। उनकी शब्दावली भी वैविधयपूर्ण होती है। इससे शिक्षा (ज्ञान) में भी वृद्धि होती है। समाचार पत्र में होने को तो बहुत सी चीज़ें होती हैं, जैसे समाचार, कहानी, कविता, लेख, समीक्षा, खेल – कूद, अर्थतंत्र और विज्ञापन लेकिन किसी समाचार पत्र की पहचान उसमें प्रकाशित समाचारों से होती है। जहाँ–जहाँ जिस क्षेत्र में किसी तरह का परिवर्तन नजर आता है , वहाँ–वहाँ 'समाचार पत्र' की अहम भूमिका है।

पत्रकारिता यदि सामाजिक परिवर्तन का सशक्त हथियार है तो शिक्षा की भी मानव विकास में तथा उसे 'सामाजिक प्राणी' बनाने में महती भूमिका है। शिक्षा और पत्रकारिता का यह समन्वित संश्लिष्ट रूप है। पत्रकारिता का प्राथमिक लक्ष्य शिक्षा के माध्यम से विकास करना, सूचना देना और जागृति पैदा करना, जन–जीवन स्तर में व्यापक सुधार करना, विभिन्न समाजों एवं समुदायों, क्षेत्रों और राज्यों के बीच में आपसी समझदारी तथा सहानुभूति पैदा करके एक राष्ट्र के रूप में संगठित करना । इनकी जीवन–पद्धति की विशिष्टताओं, संस्कृतियों, रीति–रिवाजों तथा परंपराओं की सुरक्षा करना, उन्हें मजबूत करना एवं समृद्ध करना है, जबकि द्वितीय लक्ष्य है ' मनोरंजन के लिए मनोरंजन' पत्रकारिता को चाहिए कि वह राष्ट्रीय संस्कारों को जगाए; मानवीय मूल्यों के

रूप में राष्ट्रीय संस्कारों के ग्रहण की शिक्षा दे; व्यक्ति को राष्ट्रीय आचरण सिखाए; अपने राष्ट्र की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक स्थितियों के प्रति उसमें सकारात्मक सोच पैदा करे। स्वाधीनता के बाद पत्रकारिता अब शिक्षा के नव–निर्माण की ओर सक्रिय है। पत्रकारिता जन–जन का उसके कर्तव्य बोध का अहसास कराके राष्ट्र की गौरवमयी परम्पराओं को भी उजागर करती है। तत्कालीन नई पीढ़ी में शिक्षा के क्षेत्र में कुछ कर गुजरने और मर मिटने की अभूतपूर्व प्रेरणा मिलने के साथ–साथ अपनी साहित्यिक विरासत को सुरक्षित रखने की भी अद्‌भुत आकंश थी।

शैक्षिक समाचारः विभिन्न शैक्षिक संस्थानों द्वारा चलायी जा रही शैक्षिक प्रवृत्तियों, शिक्षा जगत् की घटनाओं तथा शैक्षिक समस्याओं को विभिन्न माध्यमों के द्वारा जनता तक पहुँचाना पत्रकारिता का कार्य है। आज देश का बहुत बड़ा वर्ग शिक्षा जगत से जुड़ा है। केन्द्र एवं राज्य सरकारों के बजट का बहुत बड़ा भाग शिक्षा पर खर्च किया जा रहा है। देश भर में विद्यालयों, महाविद्यालयों, तकनीकी शिक्षण संस्थानों आदि से न सिर्फ हजारों शिक्षक जुड़े हुए हैं वरन् लाखों, विद्याार्थियों के भविष्य का निर्माण भी वहाँ हो रहा है जिनके हाथों में भावी भारत की बागडोर सुरक्षित है। यह पत्रकारिता का सकारात्मक पक्ष है जिसके समुचित विकास से समाज में वैचारिक चेतना तो विकसित होगी ही, साथ ही शिक्षण संस्थानों के छात्र–अध्यापक समुदाय में भी आपसी सौहार्द तथा समझ का वातावरण भी उत्पन्न हो सकेगा। शिक्षा संस्थाओं में अर्न्तसंबन्ध कायम करने का यह सशक्त माध्यम है। इसके द्वारा ही उच्च शिक्षा को प्रत्यक्ष रूप से समाज तथा आम जन तक पहुँचाया जा सकता है।

विभिन्न समाचार पत्र द्वारा विद्या का प्रसारण होता है जिससे बौद्धिक विकास और चरित्र निर्माण होता है तथा मानव अपने जीवन में सभी चरणों पर विकास का प्रयास करता है। इस तरह की शिक्षा में हर क्षेत्र का ज्ञान–भण्डार

उपलब्ध होता हैं। पत्र–पत्रिकाओं में शिक्षा सम्बन्धी प्रश्न, अपनी रुचि के अनुसार विभिन्न क्षेत्रों के विषय में जानकारी दी जाती है और उसी में टेलीविजन, रेडियो पर खेल, विज्ञान, अध्यात्म, राजनीति आदि से जुड़े कार्यक्रम व साक्षात्कार भी ज्ञानवर्धन करते हैं। शिक्षा कार्यक्रमों के प्रसार के कारण आज ग्रामीण क्षेत्रों से साक्षरों की संख्या में जबरदस्त वृद्धि हुई है।

पत्रकारिता से शिक्षा प्राप्त करने पर यह लाभ होता है कि इसे दोबारा पढ़ सकते हैं। इस स्थिति में हम फिर से लेख की दिशा पर यह कह सकते हैं। पत्रकारिता में –

- समाचार एवं प्रस्तुति मुद्रित स्वरूप में होती है।शिक्षा से संबंधित प्रस्तुति को पढ़ा सकते हैं।चित्र मुद्रित होने पर उसे देख सकते हैं।
- शिक्षा से संबंधित तथ्यों को आगामी संदर्भों हेतु सुरक्षित रखा जा सकता है।
- प्रिंट माध्यमों हेतु साक्षरता को बढ़ाती है ।
- इसकी पहुँच असीमित है और प्राप्ति हेतु शुल्क भी कम है।
- शिक्षा से संबंधित समाचार संकलन, चयन, कंपोजिंग, प्रस्तुति, छपाई आदि की प्रक्रियाओं के पश्चात् प्रिंट माध्यम(पत्र–पत्रिकाएँ) पाठकों के हाथ में आता है,अतः समाचार के घटने के साथ ही उसे व्यापक वर्ग तक पहुँचाया जा सकता है।
- समाचार–पत्र, पत्रिकाओं हेतु व्यक्ति एक स्थिर प्रवृत्ति के साथ हाथों में हाथ लेकर शिक्षा आधारित समाचारों को देख – पढ़ सकता है।
- चित्र के साथ प्रस्तुत करने के कारण दृश्य स्वरूप में घटना एवं प्रस्तुति को पूरे स्वरूप में घटित होते देख सकते हैं।

अति अपार जे सरितबर, जो नृप सेतु कराहिं।
चढ़ि पिपीलिकाऊ परम सुख बिन श्रम पारहि जाहिं।।

– रामचरितमानस

यदि विशाल नदी पर राजा सेतु बना देता है तो चींटी भी बिना श्रम के उस विशाल नदी को आसानी से पार कर लेती है।

इसी तरह शिक्षा भी एक सेतु है। पत्रकारिता के द्वारा इसे आसानी से पा सकते हैं। शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व एवं दृष्टिकोण को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है। शिक्षा मनुष्य को उसके कुसंस्कारों से दूर करती है। इससे ही मनुष्य के अच्छे संस्कार, अच्छी जीवन शैली और चरित्र की उच्चता और दृढ़ता विकसित होती है। जब मनुष्य शिक्षित होता है तब उसमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण भी उत्पन्न होता है। शिक्षित व्यक्ति अप्रत्यशित कठिनाइयों को झेलने में ज्यादा सक्षम होता है। शिक्षा तो संस्कृति, सभ्यता और स्वतन्त्रता की वाणी होने के साथ ही यह जीवन में अभूतपूर्व क्रान्ति की अग्रदूतिका है।

शिक्षा के क्षेत्र में पत्रकारिता का योगदान :

विश्वविद्यालयों तथा अन्य शिक्षण संस्थाओं में होने वाली संगोष्ठियों के भी समाचार, समाचार–पत्र/पत्रिकाओं में मिलती है।

- ❖ गोष्ठियों में यदि किसी विशेषज्ञ को आमन्त्रित किया गया तो उसका कवरेज अधिक प्रमुखता से करते हैं। शिक्षा संस्थाओं के किसी भी आयोजन के साथ यदि विशेषज्ञ जुड़े हैं तो वह समाचार दो कॉलम के शीर्षक के साथ अधिक विस्तार से छापता है। इससे उसके बारे में ज्यादा विस्तार से सूचना प्राप्त कर सकता है।
- ❖ विश्वविद्यालय शिक्षक, छात्र तथा कर्मचारियों के आंदोलन के समाचार भी मिलते हैं।विश्वविद्यालय की सिंडिकेट की कार्यवाही के समाचार भी पत्रों में मुख्य चर्चा का विषय है।
- ❖ शिक्षा के क्षेत्र में नये सुधार जिनमें पाठ्यक्रमों में सुधार, परिवर्तन, नये विद्यालय तथा शिक्षा जगत् की समस्याओं पर भी समाचार प्रकाशित किया जाता है।

- ❖ पत्रों में सम्पादक के नाम प्रकाशित पत्रों के स्तम्भों में प्रशिक्षित अध्यापकों की कमी, विश्वविद्यालय की असावधानी, हड़तालों से छात्रों की हानि, शिक्षाकी समस्या, परीक्षा के प्रश्न पत्रों में गड़बड़, नई शिक्षा नीति, परीक्षा पद्धति, महिला शिक्षा, पाठ्य पुस्तकों की त्रुटियाँ आदि विषय प्रमुख है।
- ❖ नवभारत टाइम्स में प्रत्येक शनिवार को 'परिवार' शीर्षक नाम से शिक्षा से संबंधित विषय का नियमित प्रकाशन होता है।इन स्तम्भों में प्रकाशित लेखों के माध्यम से अनेक सामयिक शैक्षिक विषयों पर विचारोत्तेजक चर्चाएँ प्रारम्भ की गयीं।
- ❖ शैक्षिक प्रश्नों अथवा समाचारों को मुख्य पृष्ठ पर स्थान दिया है। इसके साथ ही शिक्षक को मिले पुरस्कार आदि के समाचार मुख्य पृष्ठ पर प्रकाशित करते हैं।
- ❖ लगभग सभी शैक्षिक समाचारों का प्रकाशन पत्र के स्थानीय समाचारों के लिए निर्धारित पृष्ठ पर ही होता है कुछ महत्वपूर्ण समाचार अंतिम पृष्ठ पर भी प्रकाशित होते हैं।

पत्र–पत्रिकाओं में कम से कम दस से पन्द्रह प्रतिशत तक का स्थान शैक्षिक समाचारों को मिलना चाहिए। शिक्षा ही एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें सर्वाधिक व्यक्ति जुड़े हुए हैं अतः पत्रकारिता के द्वारा इसके उत्थान व विकास के लिए उचित ध्यान देना जरूरी है। शिक्षा के विकास के साथ–साथ पत्रकारिता प्रगति की राह पर अग्रसर होती जा रही है।

पत्रकारिता समाज के हर पहलू से प्रभावित होकर हर पहलू को प्रभावित करती हैं। इसमें शिक्षा एक प्रमुख क्षेत्र है। इसमें अच्छी और सकारात्मक बातों कोप्रोत्साहित करते हुए समाज की खराबियों, बुराइयों और गलत कामों को उजागर कर हतोत्साहित करती है। शिक्षा के प्रचार–प्रसार के लिए पत्रकारिता का विकास संख्यात्मक और गुणात्मक दोनों स्तरों पर है। सभी अवधिवाले

समाचार–पत्र पढ़ते हैं, क्योंकि आज के पत्रों में सभी के लिए कुछ न कुछ विषय मौजूद है। इससे समाचार पत्रों की संख्या, उनकी प्रसार संख्या और उनके पाठकों की संख्या लगातार बढ़ रही है। आज के नव युवकों के लिए समाचार पत्र के रूप–रंग के साथ प्रस्तुत है यह छपाई की तकनीकों का कम्प्यूटरीकरण होने और आधुनिक मशीनों के जरिए ही संभव है। पत्रकारिता (प्रिंट या ई–पत्रकारिता) में समाचार और सामाजिक विषयों के साथ समाज कल्याण, फिल्म, चिकित्सा, स्वास्थ्य, इंजीनियरी, प्रौद्योगिकी, कृषि, पशु–पालन, श्रम, परिवहन, धर्म, संगीत, संचार, खेल, बैंक, बाल साहित्य, महिला, अर्थ, विज्ञान, बीमा आदि अनेक विषयों पर विवरण प्रस्तुत करते हैं। पत्रकारिता के विभिन्न विषय से ही भाषा का सम्मान तो बड़ा ही है उसके साथ ही साहित्य का ज्ञान भी। विभिन्न धार्मिक विषयों के बारे में प्रस्तुत कर यह हमारे समकालीन समाज का एक बहुत बड़ा हिस्सा बन गया है। इससे ही भारतीय सभ्यता, संस्कृति और मूल्यों की दृष्टि भी बढ़ी है। 'रामायण' एवं 'महाभारत' के अंशों को एक सीख जैसे एक या दो अनुच्छेद में देकर यह भारत में ही नहीं विदेशों में भी बहुत लोकप्रियता प्राप्त की है। साहित्य समाज का दर्पण होता था किन्तु आज पत्रकारिता समाज का दर्पण हो गया है। इसने ही साहित्य, कला और संस्कृति को पूर्णतः प्रदूषण युक्त कर दिया है। आज के पत्र–पत्रिकाओं में समाज जैसा है उसका हू–ब–हू चित्र प्रस्तुत कर रहा है इसके साथ ही किसी भी वस्तु की महत्ता, उपयोगिता उसकी गुणवत्ता उसके गुणों से नहीं अपितु मीडिया द्वारा प्रचारित छवि एवं प्रतिष्ठा से तय होती है।

समाज में होनेवाले परिवर्तनों से पत्रकारिता भी प्रभावित हुई । सबसे पहला प्रभाव यह हुआ कि इन परिवर्तनों तथा शिक्षा के फैलने से लोगों में जागृति आने लगी और दीन दुनिया में तेजी से आ रहे बदलाव तथाहो रही घटनाओं को जल्द से जल्द जानने को उत्सुक हो गए। इससे प्रसार संख्या बढ़ने लगी और

साथ–साथ पत्रकारिता में अब विभिन्न पहलू जुड़ने लगे। खासतौर पर शिक्षा के क्षेत्र में पत्रकारिता ने अपना अंग अलग बना लिया। रोजगार प्राप्ति का यह एक अच्छा माध्यम बनने लगा। जनमत बनाना, उसे बनाने में मदद करना तथा लोकगुरू की भूमिका आज भी पत्रकारिता के पास है।

पत्रकारिता समाज का हिस्सा है। समाज को वह प्रभावित तो करती है लेकिन यह संभव नहीं कि वह समाज से प्रभावित न हों। इसलिए समाज में बेईमानी, तस्करी, षड़यंत्र, धोखाघड़ी,रिश्वतखोरी, कामचोरी, दिखावटीपन, तड़क–भड़क, उपभोक्तावाद, धन–लोलुपता और गजाकाट स्पर्धा आदि के बारे में भी चर्चा प्रस्तुत करते हैं। इससे हम पर, हमारे भविष्य पर, नई पीढ़ी पर भी प्रभाव पड़ेंगे। पत्रकारिता का विषय इतना विस्तृत हो चुका है कि विभिन्न विषयों के लिए विशेष संवाददाता नियुक्त किए जाते हैं और वे अपने–अपने क्षेत्रों की घटनाओं का विश्लेषण, विवेचन और विवरण समाचार पत्रों के माध्यम से जनता तक पहुँचाते हैं।

पत्रकारिता साहित्य की विधा मात्र नहीं है, यह साहित्य के प्रचार–प्रसार का साधन भी है। आज पत्रकारिता एकांकी, नाटक, साहित्य, उपन्यास, रिपोर्ताज, संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनी, फीचर आदि प्रस्तुत करते हैं। इसी विशेषता के कारण यह एक सशक्त माध्यम है और एक ऐसा माध्यम जो शिक्षण भी कर सकता है और लोक जागृति भी। इससे अच्छे कामों को पत्रकारिता के माध्यम से प्रोत्साहन मिलता है और ऐसे काम समाज में फलते–फुलते हैं। अतः समाज कल्याण की दिशा में यह अपना योगदान प्रस्तुत करता है।

समय और समाज में घटित होने वाले नित नूतन अपरिहार्य परिवर्तनों के कारण साहित्य एवं कलाओं के स्वरूप के साथ ही साथ अभिव्यक्ति माध्यम भी बदलते रहते हैं। बीसवीं सदी एवं इक्कीसवीं सदी के इलैक्ट्रानिक मीडिया ने सूचना संचार क्षेत्र में अभूतपूर्व क्रान्ति की है। दृश्य माध्यम अत्यन्त प्राचीनकाल से

ही जनमानस को प्रभावित करने एवं अपनी विचारधारा को समझाने का एक सशक्त माध्यम रहा है। नौटंकी, रामलीला, रासलीला, लोकनृत्य आदि सभी दृश्य माध्यम ही है। चूँकि दृश्य माध्यम पाठ्य माध्यम से अधिक सहजता से ग्रहण कर लेता है। सिनेमा, टी.वी, रेडियो ने साहित्यिक विधाओं को अपने माध्यमों से उसे जनमानस से जोड़ने का अभूतपूर्व प्रयास किया है। आज साहित्य और माध्यमों में परस्पर रचनात्मक आदान प्रदान एवं संवाद अपेक्षित हो गया है। वैसे तो दूरदर्शन में धारावाहिकों की एक वृहत् सूची है परन्तु कुछ साहित्यिक धारावाहिकों का प्रसारण हुआ जिससे अहिन्दी भाषी लोगों और प्रदेशों के लोगों में इन धारावाहिकों के माध्यम से हिन्दी जानने की जिज्ञासा हुई। इन साहित्यिक धारावाहिकों में प्रेमचन्द कृत कर्मभूमि, टेलिफिल्म–गोदान, निर्मला, भीष्म साहनी कृत तमस, वृन्दावनलाल वर्मा कृत मृगनयनी, विमल मित्र की –कालीगंज की बहू, साहब, बीबी और गुलाम, मोहन राकेश की कहानियों पर आधारित मिट्टी के रंग, श्रीलाल शुक्ल का राग दरबारी, चाणक्य, चन्द्रकान्ता, तीसरी कसम, श्रीकान्ता, वर्षाली की नगरवधू, गली आगे मुड़ती है, भारत एक खोज आदि रचनाओं का दृश्यात्मक रूपान्तरण यह सिद्ध करता है कि संचार माध्यमों ने साहित्य को घर–घर पहुँचाने का बहुत ही पवित्र कार्य सम्पन्न किया है। दृश्य श्रव्य रूप में ढ़लकर सृजनात्मक लेखन बहुलांश में पहुँच जाता है। व्यक्ति स्थिर रहकर बुद्धि पर जोर डालकर साहित्यिक कृति का आस्वाद न लेकर सरल, सहज शब्दावली में प्रस्तुत कुछ चटापटा मसाले से युक्त बिना पढ़े ही चाक्षुष माध्यम से सारा स्वतः निर्मित रसायन का पान कर तृप्त होने में विश्वास रखता है। वह मसि, कागद को बिना छुए आँखन देखीमें प्रतीति करती है और उसी दृष्टि से साहित्यिक कृतियों को जाँचती, परखती है। उन सबका विवरण पत्रकारिता से ही प्राप्त करते हैं। समाचार पत्र में तालिका और समय के साथ

सभी कार्यक्रमों का विवरण प्रस्तुत करते हैं। इस तरह साहित्यिक शिक्षा के संदर्भ में पत्रकारिता अपना योगदान निभाते हैं।

4.2 पारंपरिक पत्रकारिता,पत्रकारिता का विकास और वेब पत्रकारिता द्वारा शिक्षा :

पत्रकारिताः कल और आज :भारत में पत्रकारिता द्वारा शिक्षा बहुत पुरानी है। शिक्षा के लिए पत्रकारिता में महत्वपूर्ण स्थान है। पत्रकारिता मानव जीवन के सभी पहलुओं को प्रभावित करती है। कला, विज्ञान, इतिहास, उद्योग, राजनीति, शिक्षा आदि सबको प्रभावित करने की क्षमता रखती है। 19वीं सदी में तो पत्रकारिता उतनी सशक्त नहीं हो पाई पर 20 वीं सदी में उसका अपना एक स्पष्ट रूप बनने लगा। पहले उसका स्वरूप आज से भिन्न था। पहले पत्रकारिता में शिक्षा के साथ अन्य क्षेत्र में हर तरह का खतरा उठाने के लिए तैयार राष्ट्र भक्तों ने अपनी जेबों से पैसे खर्च कर सतत घाटा उठाते हुए पत्रकारिता का झंडा बुलंद रखा था। देश की आजादी की लड़ाई मुख्यतः पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से लड़ी गई। आजादी के पूर्व हिंदी पत्रकारिता सामाजिक एवं राजनीतिक आंदोलनों से जुड़कर उर्जा प्राप्त करती थी।

हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक और पत्रकार आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी भारत के प्रथम पत्रकार थे, जिन्होंने 1904 में पत्रकारों के शिक्षण–प्रशिक्षण की आवश्यकता पर ज़ोर दिया था। हमारे देश में आजादी के काफी पहले यानी 1941 में लाहौर में पत्रकारिता की शिक्षा के लिए पहली बार विभाग भी भारत में आ गया। आज देश में लगभग एक सौ से अधिक विश्वविद्यालय निजी संस्थानों में पत्रकारिता एवं जनसंचार की कक्षाएँचल रही हैं।

यह समाज में हो रहे उतार–चढ़ाव, सृजन–उत्कर्ष को बिंबित–प्रतिबिंबित करती है। इसका महत्व मानवीय गुणों के विकास में योगदान के कारण भी है। प्रेम, करुणा, सेवा, समर्पण, त्याग एवं बलिदान के द्वारा वैश्विकता की प्रतिष्ठा की

प्रेरिका है पत्रकारिता। सत्यता, निर्भीकता, स्पष्टता, पारदर्शिता, विश्वसनीयता, साहस,स्वतंत्र निर्णय–क्षमता से पूर्ण मानव– जीवन के निर्माण में इसकी अह्म भूमिका होती है।

शिक्षा जीवन्त प्रक्रिया है। यह मनुष्य–जीवन के परिष्कर एवं निरन्तर विकास की सीढ़ी है जो उसे शिक्षित और सामाजिक बनाती है। शिक्षा निरन्तर अभ्यास है। शिक्षा से हम संस्कारशील होकर सही मनुष्य बनते हैं। समाचार पत्र–पत्रिकाओं के द्वारा जो शिक्षा प्राप्त होता है उसमें भाषा भी एक अनिवार्य अंग है। समाचार पत्र–पत्रिकाओं का उद्देश्य अपनी बातों को अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाना होता है।

'' मुद्रित शब्द को पढ़ना और समझना तथा साथ ही साथ मानसिक स्तर पर फीडबैक होने के कारण उसका महत्व और प्रभाव अधिक है। ''[*2]

समाचार पत्र अधिक लोगों के लिए निकाले जाते हैं, उनकी भाषा आम लोगों की ही भाषा होती है। उनकी शब्दावली भी वैविध्यपूर्ण होती है।

प्रिंट मीडिया :समाचार – पत्र लोगों के लिए आईने जैसा है जिसमें वे अपने व संसार को देख और जान पाते हैं। मुद्रित सामग्री का शिक्षा के क्षेत्र में अत्यन्त प्राचीन काल से ही महत्व रहा है। यह शिक्षा का सर्वाधिक अनिवार्य अंग है। सर्वप्रथम 15वीं शताब्दी में छपाई की तकनीकों का विकास होने के पश्चात इस क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ। संप्रति मुद्रण की सुविधाओं के रूप में टाइप प्रेस द्वारा छपाई, टाइपराइटर मशीन द्वारा मुद्रण और आधुनिक संगणक प्रौद्योगिकी द्वारा प्रदन्त मुद्रण की सुविधाओं का उपयोग हो रहा है। इससे विश्वस्तर पर शिक्षा प्रणाली में समरूपता आने लगी है। शिक्षा संबंधी पाठ्य सामग्री मुद्रण प्रौद्योगिकी के कारण आज बहुगुणित रूप में विश्व के किसी भी कोने तक सहजतापूर्वक पहुँचाया जा सकता है।उच्च शिक्षा के स्तर पर

शोधग्रन्थों, शोधपत्रों और कार्यालयीन कार्यो के लिए अपेक्षित सामग्री प्रस्तुत करते हैं ।

शिक्षा आज से नहीं अपितु प्राचीन काल से ही बहुत महत्वपूर्ण रही है। पत्रकारिता का यह भी बड़ा काम है, लोगों को शिक्षित करने में यह अह्म भूमिका निभाती है। प्रिन्ट और इलेक्ट्रानिक माध्यमों के जरिए आज शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य हो रहा है।

पारंपरिक पत्रकारिता द्वारा शिक्षा और पत्रकारिता का विकास :

पुरानी पत्रकारिता तो संपूर्ण और समग्र व्यक्तित्व के विकास का माध्यम है, जिससे व्यक्ति अपने निर्धारित आदर्शों पर खरा उतरने के लिए प्रभावी ढंग से आगे बढ़ सके। पत्रकारिता द्वारा प्राप्त शिक्षा से चरित्र का निर्माण हो, जिससे जीवन की चुनौतियों को साहस और धैर्य से सामना कर सके। इस शिक्षा द्वारा अविकसित प्रकृति और पशु–वृत्ति का मूलोच्छेदन होता है, फिर एक निर्मल और उत्कृष्ट आत्मा के रूप में रूपान्तरण होता है। शिक्षा का जीवन से जुडे सभी पक्षों से सरोकार होना चाहिए। शिक्षण–प्रशिक्षण की आवश्यकता पर भी पत्रकारिता में ज़ोर दिया था। इससे उपलब्ध शिक्षा ऐसी हो जिससे व्यक्ति, परिवार, समाज, देश और संसार के नागरिक के रूप में अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन कर सके। शिक्षा से व्यापक दृष्टिकोण, सम्यक् निर्णयशक्ति और कुशाग्र बुद्धि का विकास सुनिश्चित होना चाहिए।

पत्रकारिता से प्राप्त शिक्षा से धर्मान्धता, कुटिलता, पाखण्ड, दुराग्रहता और स्वार्थ की संकुचित सोच से मनुष्य को ऊपर उठाना है। धर्मान्ध व्यक्ति पढ़कर भी अनपढ़ है। उच्चतम शिक्षा वह है जिससे हमारे अन्दर निर्मल प्रेम, साहस, कर्तव्य परायणता, सन्तुलिता, मनोवस्था, भक्ति, विश्वास, विवेक, तटस्थता, सहनशीलता और आत्मज्ञान का स्फुरण हो सके। शिक्षा जीवन का परिचय है। इसे निश्चित रूप से धर्म और सम्प्रदाय निरपेक्ष होना चाहिए। यह पत्रकारिता से

ही संभव है। इसका उद्देश्य विभिन्न समुदायों के विद्यार्थियों के बीच सांजस्य और सार्वभौम भाईचारा का विकास होना चाहिए।

आत्मा मानव रूपी वृक्ष की जड़ है। मन तना है। शरीर शाखायें और पत्तियाँ निश्चित रूप से महत्वपूर्ण है; क्योंकि वे सूर्य की किरणों को ग्रहण कर पूरे पेड़ का पोषण करती हैं। इसी प्रकार तना भी महत्वपूर्ण है, किन्तु यदि जड़ों को सींचा न जाय तो फिर कुछ नहीं बचेगा। पारंपरिक पत्रकारिता द्वारा ऐसी शिक्षा देना चाहिए जिससे निश्चित रूप से लाभ उठा सके।

इन पंरपरागत पत्रकारिता का महत्व संचार–क्रांति के इस युग में भी आगे बढ़ा है। लेखन एवं वाचन की प्रक्रिया आज भी इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के आधार बने हुए हैं। आज कुछ जागरुक लोगों ने सूचना के इन परंपरागत माध्यमों का प्रयोग समाज में नई जागृति लाने का प्रयास करते हैं।

पत्रकारिता विकसित होने के साथ ही उद्देश्य में भी परिवर्तन आ गया है। अब पत्रकारिता का उद्देश्य – जानकारियों एवं विकास की संभावनाओं को जनता तक पहुँचाना और जनता की इच्छाओं और जरूरतों को सत्ता और शासक वर्ग तक पहुँचना। इससे दोनों को समाचार साफ–साफ प्रस्तुत करने के साथ ही शिक्षित भी होते हैं। अब पत्रकारिता समाज के हर पहलू को प्रभावित करती है। पत्रकारिता का एक हिस्सा व्यवसायिकता के घेरे में हो गया। विज्ञान की तरक्की एवं प्रतिस्पर्धा के चलते अब समाचार पत्र रंगीन, सुंदर तथा विविध सामग्री से परिपूर्ण हो गये हैं, लेकिन मूल आधार आज भी वहीं हैं और विज्ञान से यह आधार और भी निखरा ही है और लोगों तक पहले की तुलना में शीघ्र ही पहुँच रहा है। पत्रकारिता पूर्व की अपेक्षा आज अधिक विविधता लिये अधिक विस्तृत और अधिक सामाजिक, सांस्कृतिक एवं जीवन सापेक्ष हो गई है। सही अर्थों में वह जीवन की निर्मात्री व विशेषका बन गई हैं। पत्रकारिता अपने व्यापक एवं

विशाल कलेवर में जीवन के स्थूल एवं सूक्ष्म सभी संदर्भों को समेटे हुए है जिससे हर समाचार से लोग शिक्षित होते हैं।

वेब पत्रकारिता द्वारा शिक्षा :इंटरनेट के जरिये की जाने वाले पत्रकारिता ऑन लाइन पत्रकारिताकहा जाता है। 'ऑन लाइन पत्रकारिता' में वल्ड वाइल्ड वेब पर विश्व के किसी भी कोने में समाचार को पढ़ा जा सकता है, देखा जा सकता है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहुँच वाले इस शक्तिशाली माध्यम की सफलता के लिए वेब पत्रकारिता अनिवार्य हो जाता है कि इसके पत्रकारों में पारंपरिक पत्रकारिता की समझ के साथ–साथ बदलते तकनीकी परिवेश में एक लोचपूर्ण वैचारिक अंतरसंबंधों का भी समावेश किया है।

आज अत्याधुनिक तकनीकी विधाओं की प्रतिक्रिया स्वरूप संचार माध्यमों ने पत्रकारिता की अनेक विधाओं का रूपान्तरण श्रव्य– दृश्य माध्यमों के अनुरूप किया गया है। प्राचीन एकांकी और नाटक जो शिक्षा का माध्यम रहा, अब उसकी जगह फीचर फिल्म, टेली ड्रामा, टेलीफिल्म, कार्टून फिल्म, ऑपेरा, ग्राफिक्स आदि के श्रव्य–दृश्य प्रयोग होने लगे हैं।

वेब पत्रकारिता विश्वग्राम के सपने को साकार करने में सक्षम है। इससे अंकरंगता, आत्मीयता की वृद्धि होती है। यह विश्व को जोड़ने की अद्यतन इलेक्ट्रानिक प्रणाली है। इसके प्रधान तत्व समाचारों की नवीनता और प्रामाणिक तथ्यता है। यह भौगोलिक सीमा का अतिक्रमण करते हुए टाइम–स्पेश की बाध्यता को समाप्त करने में सफल है। वेब पत्रकारिता में शिक्षा से संबंधित विषयों के साथ स्थाई स्तंभों में वालीवुड, समाचार, खेल–हलचल, क्रिकेट, वेब दुनिया सिटी, वैवाहिक हेल्प लाइन, बिजनेस, भविष्य फल, गुदगुदी, वेबखोज, व्रत–त्योहार, कैरीकेचर–वामा (नारी), आई. टी कैरियर, नन्हीं दुनिया, पर्यटन, मौसम, धर्म –दर्शन, बहस आदि प्रकाशित करते हैं। इन स्तंभों में प्रत्येक प्रकार की सूचनाएँ, पुस्तक परिचय, पठन–सामग्री उपलब्ध हैं।

आधुनिक पत्रकारिता समाज की, जनजीवन की विविध छवियोंऔर रंग–रेखाओं को स्पष्टतः उभारती है। अतः इसका क्षेत्र बहुआयामी है। आज राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक इत्यादि सभी क्षेत्रों की एक सुविकसित पत्रकारिता देखी जा सकती है। अनेक भाषाओं के साथ हिन्दी पत्र–पत्रिकाएँ भी इंटरनेट पर उपलब्ध हैं। हिन्दुस्तान, दैनिक जागरण, इंडिया दुडे, हंस, आजकल, नया ज्ञानोदय आदि पत्र–पत्रिकाएँ इसके लिए प्रमाण है। इसमें शिक्षा से संबंधित साक्षात्कार, परिचर्चाएँ, लेख, कहानी, उपन्यास, आलोचना, यात्रा–वृतांत आदि प्रसारित होते हैं। इस प्रकार वेब पत्रकारिता विश्व व्यापार की इलेक्ट्रॉनिक उपलब्धियों में प्रमुख साधन है। वेब पत्रकारिता शिक्षा के लिए एक नवीन और मौलिक प्रणाली है। कम्प्यूटर अनुदेशन व्यक्ति निष्ठ प्रभावों से पूर्णतया मुक्त रहता है। इसके द्वारा छात्रों को व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कराया जा सकता है। विद्यार्थियों को ज्ञानात्मक स्तर के उद्देश्यों की प्राप्ति में यह विशेष रूप से सहायक सिद्ध होता है। इसके द्वारा सरल और जटिल दोनों ही प्रकार के विषयों को सार्थक ढंग से प्रस्तुत करते हैं। रुचि, राय तथा मनोवृत्तियों के निर्माण में वेब पत्रकारिता को बहुत श्रेय उपलब्ध है, इनका बहुत चमत्कारिक प्रभाव देख सकते हैं। इससे उपलब्ध समाचार हमारी भावनाओं को स्पर्श करते हैं। इनसे हमारी जानकारी बढ़ती है। ज्ञानार्जन और बौद्धिक विकास में सहायक शिक्षा के प्रचार एवं प्रसार के प्रमुख साधन वेब पत्रकारिता ही हैं।

वेब पत्रकारिता ने मानवता के ज्ञान और चेतना में वृद्धि की है, मुक विचारों को वाणी दी है और स्वप्नों में रंग भरे यह एक साधारण व्यक्ति के सामर्थ्य से बाहर की चीज़ है कि वह विज्ञान की खोजों और दार्शनिकों के उँचे विचारों को आसानी से समझ सके। पर वेब पत्रकारिता ने उसे संभव बना दिया। इसमें गहन से गहन विषयों को साधारण भाषा में प्रस्तुत किया जाता है। साहित्यिकों की ऊँची उड़ान, धर्म–गुरुओं का दिव्यज्ञान, वैज्ञानिकों की गहन खोज और

प्रयोग को आकाश से उतारकर सर्वसाधारण के लाभ के लिए धरती पर ला धरा है। आज के युग में शिक्षा का अर्थ मात्र डिग्री या प्रमाण–पत्र प्राप्त करना ही नहीं है। राष्ट्र–निर्माण का महत्वपूर्ण अंग शिक्षा है। अतः शिक्षा उस दिशा में मानव को ले जा सके, जहाँ तीव्र गति से आ रहे परिवर्तनों और चुनौतियों का सामना करने में वह सक्षम और सशक्त हो सके। आजकल शिक्षण संस्थाओं में कम्प्यूटर का अत्यधिक प्रयोग हो रहा है। जिसके कारण लोगों में विश्वव्याप्त समाचार के प्रति रुचि बढ़ायी जा रही है। सूचनाओं की तीव्र गति से गणना करके उन सूचनाओं को भविष्य के प्रयोग हेतु संगृहीत करना, सूचनाओं का आदान–प्रदान करने में सक्षम होना आदि वेब पत्रकारिता की विशेषताएँ हैं। यह शिक्षा के क्षेत्र में ग्लोबल क्रांति है।

वेब पत्रकारिता के विभिन्न उपकरणों को अपना गुरु मानकर वे (लोग) अकेलेही एकलव्य की तरह ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं और गुरु–दक्षिणाके रूप में सिर्फ डालर खर्च कर रहे हैं। इन्टरनेट, ऑनलाइन और विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा दी जा रही उच्चतम शिक्षा, शिक्षकों के ज्ञान का निचोड़ है, जिसे विद्यार्थी अपनी योग्यता से एकाकी ग्रहण करता है। आनेवाले युग में वेब पत्रकारिता ही गुरु की भूमिका में महत्वपूर्ण पद पर प्रतिष्ठित होगा।

वेब पत्रकारिता की विशेषता यह है कि वह विद्यार्थियों को उन बातों से सीधे परिचित करा सकता है जिसके बारे में वह अब तक सुनता या पढ़ता रहा है। उदाहरण के लिए, इतिहास का विद्यार्थी उन स्थानों को अपनी आँखों से देख सकता है जिनके बारे में वह पढ़ता था, भूगोल का विद्यार्थी उन जगहों की विस्तृत दृश्यात्मक जानकारी हासिल कर सकता है, जिसे पूरे जीवन में शायद ही साक्षात् देखने का उसे मौका मिले। इसी प्रकार विज्ञान का विद्यार्थी प्रयोगशालाओं, अनुसंधान केंद्रों, नए और विविध प्रकार के प्रयोगों से दृश्य माध्यमों के द्वारा परिचित हो सकता है। इस दृष्टि से वेब पत्रकारिता का महत्व

असंदिग्ध है। इससे दृश्य, प्रतीक, संगीत, ध्वनि, गति आदि के सम्मिलित प्रयोग द्वारा 'ज्ञान को अपने सर्वोत्तम रूप' में हमारे सामने रख सकता है। इसी तरह ज्ञान सहज जानकारी प्राप्त होता है। वेब पत्रकारिता द्वारा उसे देखना ही नहीं होता, समझना, समझाना और पुनः प्रस्तुत करना या उसे व्यवहार में प्रयोग करना भी होता है। शिक्षा कोई अ–क्रिय, स्वंय पूर्ण कार्य नहीं है बल्कि सतत संचार का ही एक अंग है। आज शिक्षा जगत में निरंतर ज्ञान वृद्धि, ज्ञान वितरण पर जोर है। जीवन पर्यंत शिक्षण व्यवस्था पर जोर है। इस तरह वेब पत्रकारिता और शिक्षा द्वंद्वात्मक रूप से अन्योन्याश्रित हैं। एक दूसरे पर आत्यधिक रूप से निर्भर है : प्रिंट और इलेक्ट्रानिक से ज्ञान और किताबे जुड़ी है। इससे शिक्षा का सार्वभौमीकरण जुड़ा है। इससे किताब जुड़ी है, अखबार जुड़ा है। आज वेब पत्रकारिता से जीवन अभिन्न है : कहा भी गया है 'साहित्य संगीत कला विहीनः साक्षात् पशु पुच्छ विषाणहीनः' यानी जो व्यक्ति साहित्य, संगीत, कला से रहित है वह पशु समान है; जन शिक्षा आज विकास का पर्याय ही नहीं; विकास का कारक और निर्माण भी है। नए ज्ञानाधारित समाज का मेरुदंड शिक्षा है। वेब पत्रकारिता है।

इण्टरनेट पर पत्रकारिता के दखल से वेब अखबार की शुरूआत हो चुकी है। आज इंटरनेट के सर्वश्रेष्ठ संस्करणों में कतिपय भारतीय समाचार–पत्रों की गणना होती है। लगभग समस्त प्रमुख भारतीय समाचार–प्रकाशनों के ऑन लाइन संस्करण नेट पर मौजूद हैं। एक आकलन के अनुसार कुल 60 प्रकाशनों के संस्करण नेट पर मौजूद हैं, जिनमें 18 साइटों अंग्रेज़ी समाचार पत्रों की हैं ,शेष साइटें भारतीय भाषाओं की हैं। अनेक छोटे समाचार पत्रों के भी वेब–संस्करण नेट पर उपलब्ध हैं। इन्हें देखना और पढ़ना एक नया अनुभव है। यह अखबार को उसके ब्राडशीट कागज पर छपे रूप में देखने–पढ़ने से एकदम अलग किस्म का अनुभव है। यही पत्रकारिता का भविष्य है। अगली सदी की पत्रकारिता

मूलतःसाइबर–स्पेस की पत्रकारिता ही होगी। इण्टरनेट पर आज आकाशवाणी, दूरदर्शन और आज तक के वेब–संस्करण उपलब्ध हैं।

वेब पत्रकारिता का एक बड़ा परिवर्तन संभव हो रहा है – टेलीकान्फेंसिंग के द्वारा। 'इसरो' के सहयोग से इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय ने अपने क्षेत्रीय और कतिपय अध्ययन केंद्रों के विद्यार्थियों और काउंसलरों के लिए इस पद्धति का इस्तेमाल आरंभ किया है। इसके अंतर्गत 'इग्नू' के मुख्यालय पर बैठे शिक्षक इन क्षेत्रीय और अध्ययन केंद्रों के विद्यार्थियों से सीधे संवाद कर पाते हैं। अभी यह व्यवस्था एकतरफा दृश्य प्रसारण और दुतरफा दृश्य श्रव्य प्रसारण के रूप में उपलब्ध है। विद्यार्थी और काउंसलर टेलीफोन और फैक्स द्वारा सीधे सवाल पूछ सकते हैं जिनका टेलीविजन के माध्यमों के उत्तर इग्नू के मुख्यालय पर बैठे शिक्षक देते हैं। दुतरफा संवाद के प्रयोग आकाशवाणी भी सफलतापूर्वक कर रहा है जो स्वास्थ्य, कानून और अन्य जन समस्याओं के लिए टेलीफोन द्वारा उसी समय पूछे गए सवालों के उत्तर दिए जाते हैं। कई अन्य शिक्षण संस्थान विशेष रूप से उच्च व्यावसायिक शिक्षण संस्थानों में इस सुविधा के उपयोग की पृवित्ति बढ़ी है। लेकिन इसके साथ शिक्षा के क्षेत्र में इंटरनेट का प्रयोग भी तेज़ी से बढ़ रहा है। कम्प्यूटर और प्रबंधन के क्षेत्र में 'आन लाइन' शिक्षा उच्च और मध्यवर्ग के बीच लोकप्रिय हो रही है।

शिक्षा–दीक्षा, शिक्षा–उन्मूलन, खादी प्रचार, स्वदेशी प्रचार, महिला शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, घरेलू आवश्यकताएँ, भाषागत, ग्रामीण तकनीकी, प्रौढ़ शिक्षा, संस्कृति, बेरोजगारी आदि विभिन्न सामाजिक विषय वेब पत्रकारिता के अभिन्न अंग है। इसके द्वारा शिक्षा के साथ हमें नाना रूपों वाली समस्याओं का परिचय विश्लेषण और उनका उचित समाधान प्राप्त होता रहता है।

शिक्षा के क्षेत्र में संगणक का प्रयोग :

संगणक अनुदेशन की उपयोगिताःसंगणक अनुदेशन की प्राप्ति विषयों के शिक्षण में सहायक होती है और इसकी सहायता से छात्रों को व्यक्तिनिष्ठ पाठ उपलब्ध कराये जा सकते हैं। इसके माध्यम से विशाल सूचना के भंडार का संचय एवं व्यवस्थित किया जा सकता है। इसके द्वारा छात्रों की आवश्यकता अनुसार चयन किया जा सकता है। छात्रों को स्वंय अनुक्रिया करने का अवसर उपलब्ध होता है और उनका उत्तर तत्काल प्राप्त हो जाता है। अनुदेशन की प्राप्ति छात्रों की रुचि, सजगता, तत्परता और तल्लीनता का विकास होता है। एक–एक पाठ वस्तु के कई अनुदेशों को वैयक्तिक अनुदेशन के आधार पर विभिन्न योग्यतावाले छात्रों का अध्ययन का अवसर उपलब्ध होता है। इसके माध्यम से कक्षा अध्यापकों को छात्रों की अनुक्रिया की जा सकती है और छात्रों के पूर्ण ज्ञान के सम्बन्ध में निर्णय लिया जा सकता है। विभिन्न अधिगम स्वरूपों के आधार पर विभिन्न प्रकार के अधिगम प्रस्तुत किये जा सकते हैं। छात्रों का मूल्यांकन और उनके उत्तरों का विश्लेषण तत्काल हो जाता है। इसका प्रयोग शिक्षा के सभी स्तरों पर हो सकता है।

वीडियो पत्रकारिता :अमेरिका में न्यू जर्नलिज्म का प्रारंभ 1940 ई. में होता है जो दृश्य–श्रव्य संचार माध्यम के रूप में प्रचलित होता है। यही भारत में वीडिया पत्रकारिता के नाम से प्रचलित है। इसमें समाचार वाचन, परस्पर वार्ता, विश्लेषण, दृश्यांकन प्रसारण, वाचक की भाव–भंगिमा का प्रत्यक्षीकरण वाचक–श्रोता की वार्ता की पूर्ण सुविधा होती है। जी न्यूज, स्टार प्लस, आज तक आदि समाचार चैनल वीडियो पत्रकारिता के माध्यम से अद्यतनता, विश्वसनीयता और सटीकता के लिए ख्यात है। कालचक्र, गरवार फिल्म्स की कैसेट पत्रिका 'लहर' दर्शकों में लोकप्रिय हैं। आध्यात्मिक जगत के लिए 'गणभूमि विजन' द्वारा चेन्नई से

रामायण, महाभारत, वेद, पुराण से सम्बन्धित गणभूमि वीडियो पत्रिका निकलती है।

4.3 भूमंड़लीकरण के दौर में शिक्षा पर पत्रकारिता का प्रभाव

आज भूमंड़लीकरण के दौर में जब हर तरह से शिक्षा का प्रचार–प्रसार व्याप्त है और यह पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से और अपनी अस्तित्व की रक्षा हेतु अनेक पत्र–पत्रिकाओं द्वारा भी संभव है। इस दौर में स्त्री–शिक्षा, स्त्री–विमर्श, शिक्षा का प्रचार–प्रसार, दलित विमर्श महत्वपूर्ण रूप से चर्चित है।

वैश्वीकरण का शाब्दिक अर्थ स्थानीय या क्षेत्रीय वस्तुओं या घटनाओं के विश्व स्तर पर रूपांतरण की प्रक्रिया है, इसे एक ऐसी प्रक्रिया का वर्णन करने के लिए भी प्रयुक्त किया जा सकता है जिसके द्वारा पूरे विश्व के लोग मिलकर एक समाज बनाते हैं तथा एक साथ कार्य करते हैं। यह प्रक्रिया आर्थिक, तकनीकी, सामाजिक और राजनीतिक, शैक्षिक ताकतों का एक संयोजन है।

भूमंड़लीकरण :भूमंड़लीकरण का अर्थ है–विखंडन एवं केंद्रीकरण के फिनोमिना का राष्ट्रीय सीमाओं के बाहर विस्तार। केंद्रीकरण का अर्थ है– जनमाध्यमों के विराटकाय संस्थानों का उदय। विराटकाय यानि बहुराष्ट्रीय कंपनियों का उदय। इन कंपनियों के द्वारा भिन्न–भिन्न माध्यमों के लिए विविधतापूर्ण सामग्री का निर्माण और उसका वितरण। भूमंड़लीकरण समाजों के बीच समरूपता व एकीकरण का विकास करता है, जिससे एक वैश्विक समाज एवं संस्कृति के विकास का मार्ग प्रशस्त होता है। यह समाज के विविध पक्षों (आर्थिक, राजनैतिक, शैक्षिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक आदि) में परिवर्तन को प्रेरित करते हैं। राजनैतिक एवं शैक्षिक व्यवस्थाओं में परिवर्तन तुल्नात्मक रूप से तेज एवं आसानी से होता है।

आज का विश्व विज्ञान, तकनीकी तथा संचार तकनीकी के हर पहलू का उपयोग करने तथा उससे लाभ उठाने का प्रयास कर रहा है। आज सारा विश्व

एक तीव्रगामी परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। पत्रकारिता से यह उपयोग होता है कि पूँजी बाजार, बैंकिंग, पुस्तकालय, शिक्षा तथा अनुसंधान, मौसम विज्ञान, अंतरिक्ष तथा दुनियाभर में उपलब्ध विभिन्न विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संबंधी नवीनतम ज्ञान और त्वरित गति से आँकड़ों एवं सूचनाओं के आदान–प्रदान, जनसंचार, मुद्रण–प्रकाशन और मनोरंजन के क्षेत्र में अत्यंत व्यापक रूप में हो रहा है।

भूमंड़लीकरण के पीछे मूल उद्देश्य है – ''सारी दुनिया एक है।'' इसमें ''वसुदैव कुटुंबकम्'' की भावना निहित है। ''वसुदैव कुटुंबकम्'' एक विराट नैतिक चेतना का प्रतिनिधित्व करता है जिसका मूल मानवीय मूल्यों में निहित है।

भारत का उदात्त एवं प्राचीन दर्शन '' वसुधैव कुटुंबकम'' संपूर्ण विश्व को एक परिवार एक इकाई के रूप में देखने, समझने व जीने की प्रेरणा देता है। सब मिलकर रहें, और इस विश्व समाज को सह अस्तित्व के साथ शांतिमय रूप में जीएँ स्पष्टतः ही यह कल्याणकारी दर्शन समूची मानव जाति को सहज व स्वाभाविक रूप से पूरी दुनिया से जुड़ने जोड़ने का संदेश देता है। विश्व व्यापार संगठन के इस दौर में अति भौतिकता और समृद्ध की इस अंधी दौड़ में आपस में सुख–दुख बांटने की उदात्त भावना ही है। भूमंड़लीकरण ने भौतिक जगत की दूरियों को मिटाया है। वैज्ञानिक उन्नति, औद्योगिक विकास, कंप्यूटर फैक्स, इंटरनेट और ई–मेल के इस युग ने हमारे सोच–विचार और विकास के सारे मानदंड बदल दिए हैं। आज पिछड़ा हुआ वह नहीं हैं जिसके पास भले ही ज्ञान व संसाधनों का भंडार है परंतु उनके आधुनिकतम ढंग से उपयोग करने का अभाव है। आज पिछाड़ा विकसित देश, विकासशील देशों पर धन तथा बल के आधार पर साम्राज्यवादी प्रभुत्व स्थापित करने के लिए दादागिरी कर रहे हैं। इसका प्रतिफल यह है कि अब विश्व एक ग्राम है अतः लेन–देन तथा आर्थिक सहयोग से संघर्षो को टाला जा सकता है। शैक्षिक परिवर्तन, परमाणु अस्त्र

शास्त्रों का भण्डारण, साम्राज्यवाद, यह सब वैश्वीकरण ने मीडिया को गहराई से प्रभावित किया है। सेटिलाइट क्रांति और इंटरनेट व्यवस्थाएँ 60 के दशक में 'ग्लोबल विलेज' बन गया है। यानि 'विश्वग्राम' का अर्थ यह होता है कि प्रौद्योगिकी के विकास के कारण दूरियाँ इतनी घट गई कि दूरदराज का क्षेत्र भी पड़ोस लगने लगा है। कहीं भी बैठकर कहीं से भी संपर्क स्थापित किया जा सकता है और आवश्यकता के अनुसार बहुत कम समय में कहीं भी पहुँचा जा सकता है।''वसुधैव कुटुम्बकम्'' की कामना से आत्मिक और भावात्मक एकता होती है। उनकी समता या निकटता संवेदना के स्तर की है। जहाँ एक में तेज यातायात, तुरंत इलेक्ट्रीकीय संपर्क, जानकारी के विस्तार और भौगोलिक दूरियों के नाटकीय ढंग से घटने की धारणा है, वहीं दूसरी में भौगोलिक, भाषिक, नस्ली दूरियों के बावजूद मानवीय संवेदनाओं की गहनता की कामना है। भूमंड़लीकरण ने मीडिया को गहराई से प्रभावित किया है। सेटेलाइट क्रांति और इंटरनेट व्यवस्थाएँ 60 के दशक में ही सामने आया और निरंतर इन्होंने अपनी उपयोगिता को साबित किया।

पत्रकारिता शक्ति है और हर व्यवस्था इस पर नियंत्रण स्थापित रखना चाहती है। सूचना लोगों के व्यवहार की दिशा निर्धारित करती है, लोगों की सोच में एकरूपता लाती है और बुनियादी रूप से लोगों की जानकारी में वृद्धि करती है। सूचना पर नियंत्रण और मनचाहे रूप में उसे सामने लाने का प्रयास वैश्विक स्तर पर महाशक्तियाँ करती रहती हैं। यही नई टेक्नॉलजी है। वैश्वीकरण के युग में मीडिया की बहुत बड़ी विशेषता मीडिया की अधिकता है। अनेक संस्करणों में प्रकाशित समाचार पत्र , विषय, उम्र व क्षेत्र के आधार पर प्रचलित टीवी चैनल, वर्गीय चेतना को अभिव्यक्त करते पत्रकारिता और इंटरनेट वेबसाइटें आदि के द्वारा शिक्षा का प्रसार आज की मीडिया की सच्चाई है।

वैश्वीकरण, पत्रकारिता और शिक्षा :

वैश्वीकरण, पत्रकारिता और शिक्षा तीनों का मूल स्त्रोत व्यक्ति है। इसी कारण तीनों अपने उद्‌भव से वर्तमान तक विकास की सतत् प्रक्रिया के दौरान एक–दूसरे से अभिन्न रूप में संबद्ध रहे हैं। शिक्षा, पत्रकारिता और भूमण्ड़लीकरण तीनों के उद्‌गम का स्त्रोत एक ही है और तीनों ही विकास की सत्त प्रक्रिया से गुजरते हुए आज की वर्तमान स्थिति तक पहुँचे हैं। यह एक–दूसरे के साथ अभिन्न रूप से जुड़े रहते हैं।

वैश्वीकरण सूक्ष्मरूप से व्यक्तियों, समूहों और समाजों के बीच सूचना, ज्ञान, अनुभव एवं तकनीकी कौशल का संवाहन, संप्रेषण एवं प्रसार है तथा मीडिया वह साधन है जिससे संचार, संवाहन एवं प्रसार संपन्न होता है और व्यक्तियों के बीच संपर्क एवं संचार के फलस्वरूप विकसित संबंधों का जाल भूमण्डलीकरण ही है।

शिक्षा के क्षेत्र में होनेवाले क्रांतिकारी परिवर्तनों से वैश्वीकरण के एकीकरण की प्रक्रिया बहुत तेज़ हुई है पत्रकारिता लोगों के विचार एवं व्यवहार को बहुत अधिक प्रभावित करता है। शिक्षा के क्षेत्र में भी पत्रकारिता की भूमिका अत्यधिक उपयोगी है। व्यक्ति को अपने व्यक्तित्व के विकास तथा जीवन को सही दिशा प्रदान करने की दृष्टि से स्वास्थ्य, रोजगार एवं व्यवसाय आदि से संबंधित जानकारी जरूरी होती है। यह शिक्षा से संभव है। इससे ही अच्छे–बुरे पक्ष को वह समझ कर अपने चरित्र व आचरण में सुधार ला सकते हैं। वैश्वीकरण कई तरह से संचार–माध्यमों को प्रभावित करता है। कंप्यूटर तथा टेलीविजन प्रौद्योगिकी हैं और इनके माध्यम से जानकारी का विकास, मनोरंजन, आयोजन, आकलन, भंडारण तथा प्रसारण के काम सूचना क्रांति है। पत्रकारिता, शिक्षा और सूचना–विस्तार अभिन्न हैं। संचार–माध्यम, चाहे दृश्य–श्रव्य हो या लिखित शब्द(पत्रकारिता), वैश्वीकरण तो शिक्षा के प्रसार के लिए महत्वपूर्ण वाहक हैं,

लेकिन जहाँ समाचार–माध्यम से वैश्वीकरण की दिशा और गति तय होती है, वहाँ वैश्वीकरण स्वंय संचार–माध्यमों को भी लगातार बदलता रहता है।

भूमंड़लीकरण, संस्कृति और मीडिया– समकालीन परिवेश में हमारे प्रतिदिन के जीवन चक्र में है और लगभग सभी क्षेत्रों में मीडिया का हस्ताक्षेप बहुत बढ़ गया है , इसके अनेक कारण हैं। मीडिया के विभिन्न जनसंचार माध्यमों ने हमें सनसनीखेज खबरों का आदी बना दिया है। भूमंडलीकरण और भूमंडलीय संस्कृति का धर्म, धार्मिकता और धार्मिक तत्ववाद से वैचारिक तौर पर गहरा संबंध है। यह वस्तुतः प्रतिगामी संबंध है। इसलिए सांस्कृतिक लोकतंत्र के निर्माण में जनमाध्यम महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते हैं। इस क्रम में जनमाध्यमों के स्वरूप को जानना व समझना होगा और इस सम्रगता के तहत मीडिया घटक एवं उसके प्रभाव का विश्लेषण अनिवार्य हो जाता है। भूमंडलीकरण मूल रूप से आर्थिक सुधार एवं प्रगति से संबंधित प्रक्रिया है।यह एक ओर संवाद की बात करता है तो दूसरी ओर आकाशीय तथ्यों पर भी जोर देता है।

इतिहास, कला,संस्कृति, राजनीतिक घटना आदि सभी क्षेत्र में सनसनीखोज तत्व हावी है। सनसनीखोज खबरें जनता के दिलों–दिमाग पर लगातार आक्रमण कर रही है। इस हमले में अधिकाधिक सूचनाएँ होती हैं। हम बराबर मीडिया से 'क्लिपें' सुन रहे हैं। भूमंडलीकरण और मीडिया स्थानीय, क्षेत्रीय, और वैश्विक अभिरूचियों, संस्कारों और संस्कृति के बीच समायोजना का काम हो रहा है। भूमंडलीकरण की प्रक्रिया में ग्लोबल और लोकल पर प्रभाव पड़ रहा है। इस प्रभाव के प्रतीक है – '' ग्लोबल ब्रांड'' यथा मैकडोनाल्ड, बर्गर किंग, पीजा हट, निकी, रीबॉक, बहुराष्ट्रीय चैनल, संगीत उद्योग और ग्लोबल विज्ञापन। वस्तुतः ग्लोबलाइजेशन ने पूरे विश्व को एक वैश्विक बाजार में बोध दिया है। आर. राबर्टयन ने ग्लोबलाइजेशनः सोशल थ्योरी एंड ग्लोबल कल्चर में वैश्वीकरण के लिए 'ग्लोबलाइजेशन' शब्द का प्रयोग किया है। इसमें 'ग्लोबल'

और 'लोकल' के द्वंद्व व अंतर्विरोधों की चर्चा की गई है। साथ ही यह दोनों संपर्क करते हैं। उदाहरण के तौर पर 'नेशनल ज्योग्राफी' चैनल में स्थानीय, जातीय, या कबीलाई जनजीवन की प्रामाणिक कवरेज व जीवन शैली के प्रसारणों में सांस्कृतिक साम्राज्यवाद और शिक्षा के नजरिए से लोकल के ग्लोबल स्तर पर जनप्रिय बनाए जाने की प्रक्रिया को देखा जा सकता है। इससे लोकल के प्रति संवेदनाएँ पैदा करने में मदद मिलती है। आज भूमंडलीकरण के कारण पलायन का तत्व सामाजिक जीवन की धुरी बन चुका है। अब हम जीतहय पलायन के रूप में जनता के एक जगह से दूसरी जगह निर्वासन, स्थानांतरण, शरणार्थी समस्या आदि को जगह–जगह देख सकते हैं। उसी तरह स्थानीय मीडिया के बजाय ग्लोबल मीडिया के बढ़ते हुए प्रभाव और उपभोक्ता संसार को हम मीडिया पलायन कह सकते हैं। साथ ही अब विचारधारात्मक पलायन के तौर पर विचारधारा के नए रूपों में नागरिकता, स्वतंत्रता, मानवाधिकार, जनतंत्र, विवेकवाद आदि का जन्म हुआ है।

वैश्वीकरण का स्वभाव :

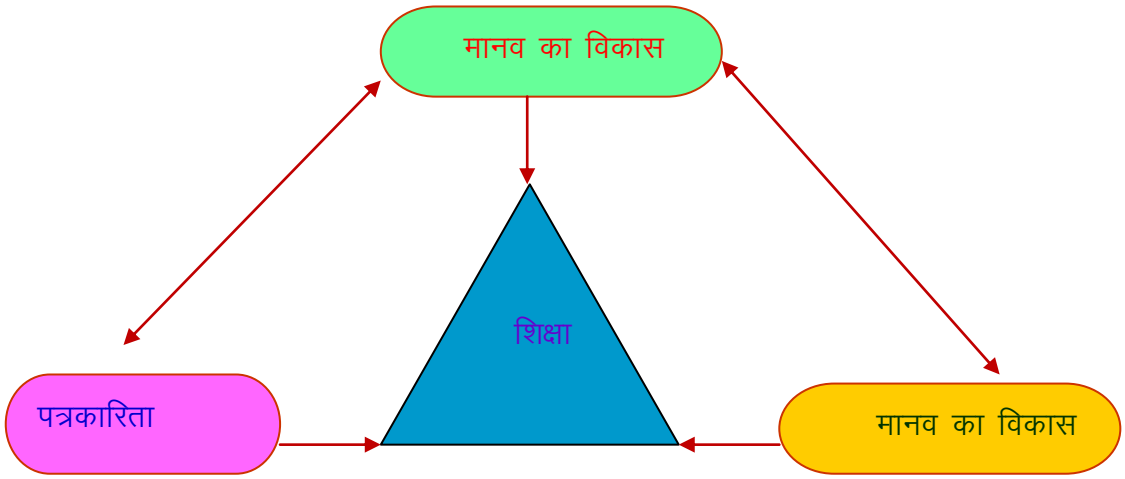

वैश्वीकरण की एक विशेषता मनुष्य को समाज–निरपेक्ष बनाना है। संप्रदाय, देश, संस्कृति और इतिहास से कटकर ही मनुष्य सही रूप में विश्व–मानव बनेगा। वह स्थायी रूप से न किसी से जुडा रहेगा, न किसी के प्रति वफादार रहेगा। 'विश्वग्राम' की कल्पना इसी रूप में की गई है। शिक्षा के लिए वैश्विक

अभियान द्वारा पूरे विश्व में हर साल ग्लोबल एक्शन वीक(वैश्विक शिक्षा सप्ताह) मनाया जाता है। शिक्षा के लिए तय लक्ष्यों को पाने के लिए सभी देशों एवं देश के भीतर राज्यों ने भी ज़िम्मेदारी ली है। इससे शिक्षा के क्षेत्र में भी आमूलचूल परिवर्तन कर दिया है।

पत्रकारिता के विकास से शिक्षा में भी विकास होता है। इसका मतलब यह है कि पत्रकारिता जिस तरीके से आगे बढ़ती है, उसी तरह स्वाभाविक रूप से शिक्षा को भी विकसित होना चाहिए। यह तभी संभव है जब भूमण्डलीकरण के साथ इसका संबंध हो। मानव के विकास में शिक्षा का स्थान सर्वोत्तम है। भूमण्डलीकरण, पत्रकारिता और मानवता के विकास में शिक्षा ही केन्द्र बिन्दु है और तीनों के आपस में अंतःसंबंध है।

वैश्वीकरण : शिक्षा व्यवस्था में बदलाव :

वैश्वीकरण विकास को उत्प्रेरित करता है। –आर्थिक वैश्वीकरण के इस सूत्र को शिक्षा के क्षेत्र में विस्तार शिक्षा व्यवस्था में भी मौलिक परिवर्तन को अभिप्रेरित करता है। इससे पहला लाभ यह है कि आर्थिक क्षेत्र में सुधारों को स्वाभाविक व स्थायी बनाने की दृष्टि से सामाजिक एवं सांस्कृतिक व्यवस्थाओं में उसके अनुकूल परिवर्तन लाना उपयोगी होता है, जो वैश्वीकरणोन्मुख शिक्षा प्रणाली के माध्यम से सहजतापूर्वक हासिल किया जा सकता है, क्योंकि शिक्षा सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन का एक सशक्त माध्यम होता है। शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण बदलाव शिक्षा प्रणाली में सूचना प्रौद्योगिकी के विस्तार के रूप में देखा जा सकता है। वैसे शिक्षा व्यवसाय में क्लास रूम टीचिंग और टीचर का तो अभी भी महत्व है; किंतु हाल के वर्षों में शिक्षा पद्धति में आधुनिक तकनीकों का प्रयोग तेजी से बढ़ा है। ट्रांसपेरेंसी, ओवर हैड प्रोजेक्टर, पावर प्वाईट प्रेजेंटेशन एवं मल्टीमीडिया के अन्य विविध साधनों के प्रयोग से क्लासरूम टीचिंग अधिक इफेक्टिव हुई है। वैश्वीकरण के वर्तमान दौर में शिक्षा के क्षेत्र में

एक अन्य किंतु महत्वपूर्ण परिवर्तन शिक्षा–संस्कृति विशेष रूप से शिक्षा के सामाजिक आचार तथा मूल्यों एवं अपेक्षाएँ देखने में आयी हैं। संप्रति शिक्षा संस्कृति में परिवर्तन बहुत स्वाभाविक है, क्योंकि वैश्वीकरण के चलते शिक्षा के प्रति परंपरात्मक सोच पूरी तौर पर बदल गई है।

वैश्वीकरण ने शिक्षा एवं संचार के साधनों से दुनिया को आपस में ज़ोड़ने का अद्भूत कार्य किया है। वैश्वीकरण ने पूरी दुनिया को प्रभावित किया है। विभिन्न देशों की आर्थिक नीतियों को संशोधित की गई हैं और उत्पादन कार्यों में सरकारों की भागीदारी कम हुई है। विगत दो–ढाई दशकों में समाज का कोई गैर आर्थिक भाग अगर वैश्वीकरण के विश्वव्यापी तेज प्रवाह की चपूट में सबसे अधिक आया है तो वह शिक्षा ही है। यह स्वाभाविक भी है , क्योंकि शिक्षा के माध्यम से समाज और उसके भागों पर न केवल पकड़ बनाई जा सकती है बल्कि उसे मजबूत व स्थायी भी किया जा सकता है।

न्यूयॉक टाइम्स के पत्रकार थॉमस फ्रैडमैन ने इसकी परिभाषा निम्नांकित प्रकार से दी है–''व्यापार, वित्त एवं सूचना का संयोजन जो एकीकृत वैश्वित बाजार एवं संस्कृति का निर्माण करता है, वैश्वीकरण है।''***3**

सूचना क्रांति 20वीं सदी की क्रांति है जिसका मुख्य संवाहक सम्पर्क को यथार्थ के धरातल पर उतारकर वैश्वीकरण को गति प्रदान की है। **वैश्वीकरण के समय में हम मीडिया के प्रमुख लक्षणों को निम्नांकित रूप में स्पष्ट कर सकते हैं–**

- मीडिया विकल्पों का प्रचलन(Publicity of alternate media)
- वैश्विक टीवी(Global Television)
- समाचार व्यापार का वैश्वीकरण(Globalisation of Business News)
- संसृति (Convergence)
- डिजिटल क्रांति(Digital Revolution)

- कॉरपोरेट प्रबंधन(Corporate Management)
- मास कल्चर का वाहक मीडिया।(Media-Mass carrier)

शिक्षा व्यवस्था में वैश्वीकरणोन्मुख परिवर्तनों का प्रभाव :

वैश्वीकरणोन्मुख परिवर्तनों से न केवल शैक्षिक संबंध, प्रक्रिया एवं प्रकार्य प्रभावित हुए हैं, बल्कि पूरा समाज (शिक्षा से संबंधित क्षेत्र) प्रभावित हुआ है। ये प्रभाव निश्चित रूप से कई मायनों में तो उपयोगी एवं उत्साहवर्धक हैं। भूमण्डलीकरण से न केवल ज्ञान, तकनीक और शोध का दायरा विस्तृत हुआ है, बल्कि लोगों की सोच भी व्यापक हो गयी है। वैश्वीकरण के तहत छात्रों, शिक्षकों एवं शोधार्थियों का एक देश से दूसरे देश में आना–जाना, पढ़ना, ज्ञान व तकनीक का आदान–प्रदान करना बहुत सुगम हुआ है। विदेश जाना आसान हो जाने के कारण भारतीय छात्रों एवं शिक्षकों को अमेरिका व योरोप सहित विश्व के अन्य देशों में अपनी योग्यता एवं कुशलता का परिचय देने का मौका मिला जिससे न केवल भारत की प्रतिष्ठा बढ़ी, बल्कि भारतियों को विदेशों में रोज़गार के अवसर भी बढ़े। वैश्वीकरण के तहत बढ़ते विदेशी संपर्क एवं आदान–प्रदान से भारतीयों का अन्य देशों से परंपरात्मक अलगाव कम हुआ हैं। इसके अलावा विश्व में एक अविकसित, अशिक्षित एवं पिछड़े राष्ट्र के नागरिक की छवि से उन्हें मुक्ति भी मिली है।भूमण्डलीकरण का शैक्षिक पक्ष यह है कि आधिपत्यवादी राष्ट्रों की शिक्षा नीति से विकासशील राष्ट्रों की शिक्षा पद्धति प्रभावित है और उनके शैक्षिक–मूल्य संकटग्रस्त हैं। भूमण्डलीकरण का सांस्कृतिक पक्ष है कि वैशविक धरातल पर जीवन–मूल्यों में एकरूपता समस्वीकृति एवं अंगीकृति की अनिवार्यता परिलक्षित होती है। भूमण्डलीकरण का प्रभाव प्रिंट मीडिया और जन संचार माध्यमों पर सर्वाधिक है।

पत्रकारिता (प्रिंट और इलेक्ट्रानिक)को मानव समाज की रीढ़ और प्रगति का आधार बता सकते हैं, क्योंकि यह वह कार्य विधा है जिसके द्वारा मनुष्य

अपनी जरूरत की वस्तुओं का निर्माण व उत्पादन करता है। आवागमन के उन्नत साधनों की सुलभता के कारण लोगों का एक देश से दूसरे देश में ही नहीं बल्कि एक महाद्वीप से दूसरे महाद्वीप में शिक्षा का प्रचार–प्रसार करना है ; अब समय साध्य व कष्ट साध्य नहीं रह गया है। भूमंडलीकरण से ही समाज में आर्थिक रूप से निशक्त लोगों की निरूपायता में वृद्धि, शिक्षा में वृद्धि, चरम व्यक्तिवादिता एवं अंधी प्रतिस्पर्धा, परंपरात्मक मूल्यों में ह्रास तथा वैयक्तिक विघटन एवं सामाजिक–सांस्कृतिक विरूपता के विकास आदि संभव है। भूमण्डलीकरण से ही विद्यालयों की अधोसंरचना का विकास, शिक्षा की बेहतर व्यवस्था, शिक्षकों की नियुक्ति, पोस्टिंग, तबादला, पदोन्नति और उनके कार्यों के पर्यवेक्षण आदि अत्यधिक सुलभ रूप से कर सकते हैं।

संदर्भ एवं सहायक ग्रंथ सूची ——चतुर्थ अध्याय

*[1] पत्रकारिता और साहित्य, डॉ. शान्ति विश्वनाथ, पृ.सं. 62।

*[2] आधुनिक पत्रकारिता, डॉ. मुश्ताक अली, पृ.सं. 83।

*[3] संचार सिद्धान्त की रूपरेखा, डॉ. प्रेमचन्द पंतजलि, पु.सं.60।

*[4] जनसम्पर्क सिद्धान्त और व्यवहार, डॉ. अर्जुन तिवारी, विमलेश तिवारी, पृ.सं.241।

❖ इंटरनेट क्या ? क्यों ? और कैसे ? , अमित कुमार मिश्र, विक्रम प्रकाशन, दिल्ली—110051, 2011

❖ इलेक्ट्रॉनिक मीडिया लेखन, डॉ. हरीश अरोडा, के.के.पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली— 110 002 , 2009

❖ इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, पी. के. आर्य, पतिभा प्रतिष्ठान, 1661 देखनीराय स्ट्रभ्ट, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली— 110 002, 2006

❖ ग्लोबल मीडिया टेलिविजन, विजय शर्मा, इशिका पब्लिशिंग हाउस, जायपुर, 2012

❖ जनसंचारः कल, आज और कल, चंद्रकांत सरदाना, कृ. शि. मेहता ज्ञान गंगा, दिल्ली, 2004

❖ जनसंचार और पत्रकारिता एन.पी. चतुर्वेदी, पोइन्टर पब्लिशर्स, जयपुर— 302003, 2005

❖ जनसंचारः बदलते परिप्रेक्ष्य में,बलबीर कुन्दरा, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली—2, 2009

❖ पत्रकारिता समस्या और समाधान, डॉ. सुजाता वर्मा, आशीष प्रकाशन, कानपुर, 2006

❖ पत्रकारिता प्रशिक्षण एवं प्रेस विधि, डॉ. स्मिता मिश्र, भारत पुस्तक भण्डार, दिल्ली—110094, 2002

❖ पाठकों की पत्रकारिता, आनन्द शर्मा, प्रकाश बुक डिपो, बड़ा बाजार बरेली

❖ पर्यावरण अध्ययन शिक्षण, संजय दत्ता, स्वास्तिक पब्लिशर्स, जयपुर, 2009

❖ भूमंडलीकरण और मीडिया, कुमुद शर्मा, ग्रंथ अकादमी, नई दिल्ली, 2003

❖ मीडिया और हिन्दी, डॉ. मधुखराटे, डॉ. हणमंतराव पाटील, प्रो. राजेन्द्र सोनवर्ण, विद्या प्रकाशन, कानपुर—22, 2008

- ❖ मीडिया मंथन, डॉ. राजेन्द्र मिश्र, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली–110002, 2009
- ❖ मीडिया लेखन, सुमित मोहन, नवोदय सेल्स, नई दिल्ली–110002, 2005
- ❖ मीडियाः मिशन से बाज़ारीकरण तक, रामशरण जोशी, वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर, 2008
- ❖ राष्ट्रीय नवजागरण और हिन्दी पत्रकारिता, डॉ.मीरा रानी बल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली– 110002, 2005
- ❖ वैश्वीकरण, मीडिया और समाज, रामगोपाल सिंह, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, जयपुर–302003
- ❖ साहित्यिक पत्रकारिता और संपादकीय पृष्ठ लेखन, राजनाथ सिंह 'सूर्य', गोविन्द पचौरी, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा–281001, 2009
- ❖ समाचार और जनसंपर्क, शैलेन्द्र सेंटर, अमन बुक सेन्टर, दिल्ली–110053, 2008
- ❖ हिन्दी पत्रकारिताः विविध आयाम, एल के मिश्र, साधना एंड सन्स, दिल्ली–110053, 2007
- ❖ हिन्दी पत्रकारिताः इतिहास एवं संरचना, प्रो. रमेश जैन, आविष्कार पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, जयपुर, 2006
- ❖ हिन्दी पत्रकारिता का समकालीन विमर्श, डॉ. शिवनारायण, डॉ. सिद्धेश्वर काश्यप, श्री नटराज प्रकाशन, दिल्ली– 110053, 2008
- ❖ हिन्दी पत्रकारिता एवं जनसंचार, डॉ. ठाकुरदत्त शर्मा 'आलो', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004
- ❖ हिन्दी पत्रकारिता कल, आज और कल, डॉ. प्रणव शर्मा, डॉ.पुनीत बिसरिया, अमर प्रकाशन, लोनी, गाजियाबाद, 2010